राष्ट्रीय सेवा भारती:
पूर्वांचल छात्रावास के पूर्वनिवासी छात्रोंका अध्ययन

संकल्पना -

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रेरणासे पूर्वांचल (ईशान्य भारत) के राज्योंमें अनेक अनेक सेवाकार्य चल रहे है. स्वतंत्रता के पूर्व से ही पूर्वांचल के प्रायः सभी राज्य अराष्ट्रीय तथा अलगाववादी शक्तियोंके शिकार बन चुके थे. पूर्वांचल की इस विशेष परिस्थिती को देखते हुए, कुछ वर्ष पहले यह सोचा गया कि बाल्यावस्था के छात्रोंको शिक्षा तथा संस्कार के माध्यमसे राष्ट्रीय विचारधारा से जोडने में छात्रावास प्रकल्प अहम भूमिका निभा सकता है. 1974 में हाफलांग में विश्व हिंदू परिषद के माध्यम से पहला छात्रावास शुरू हुआ. कुछ वर्ष बाद इस योजना का पूरे देशभर में विस्तार किया गया. 20 वर्ष पूर्व इस दृष्टीसे विचार करके शुरू किये छात्रावास प्रकल्प का विस्तार अब देशके 16 प्रांतों मे हो चुका है. वर्तमान में पूर्वांचल में लगभग उतने ही छात्रावास चल रहे है. गत 14-15 वर्षोंसे इन छात्रावासों से कई हजार छात्र (तथा छात्राएँ) अपनी पढाई पूरी कर चुके है. इस राष्ट्रव्यापी प्रयास की उपलब्धियां क्या तथा कहां तक रही इसका अनुमान लगाना अब आवश्यक है, जिससे आगे की भूमिका स्पष्ट हो सकती है. इस हेतूसे इन पूर्वछात्रों के सघन अध्ययन का प्रयास राष्ट्रीय सेवा भारती ने किया जिसका यह निवेदन है. पुणे स्थित सेवावर्धिनी ने इस अध्ययन की पूर्वतैयारी, प्राप्त जानकारी का विश्लेषण तथा अंतिम निवेदन बनाने में सहयोग दिया है.

अध्ययन का उद्देश्य :

- पूर्वछात्रों की विस्तृत जानकारी संकलित करना.
- अपने निजी जीवन को शुरू करने वाले इन पूर्व्छात्रों के अनुभव तथा सद्यःस्थिती ‘ अपने गांव वापस जाने वाले कितने तथा शेष भारत में स्थायी - संख्या, व्यवसाय- नौकरी/स्वरोजगार/..., सामाजिक कार्य में सहभाग, कहां/ क्या काम कर रहे है...? कहीं मिशन से जुडकर काम कर रहे है क्या...? इस की जानकारी संकलित करना
- उनकी सामाजिक सहभागिता, स्थानीय प्रतिमा, स्थानीय नेतृत्व इ.
- उस छात्र के प्रयासों के कारन उस गांव/ जनजाती समाज में कोई दृश्य परिवर्तन हो रहा है क्या?
- राष्ट्रीय विचारधारा से जुडाव कहां तक है?
- उस छात्र के व्यक्तिगत जीवनशैली में छात्रावास में हुए संस्कारो का प्रतिबिंब दिखाई देता है क्या? (गुणात्मक परिवर्तन)
- उस छात्र के परिवार के अन्य सदस्योंका (माता, पिता, भाई, बहन आदि...) छात्र तथा छात्रावास के बारे में अभिमत.
- इस पूरे प्रयास में लगी मनुष्यशक्ति तथा अन्य संसाधनों का हिसाब...

अध्ययन कार्यप्रणाली:

- इस व्यापक अध्ययन की चर्चा करने हेतू प्रथम बैठक 27 अप्रैल 2012 को हुई . अध्ययन का हेतू- उद्देश्य तथा पध्दती निश्चित करना, अध्ययन की दृष्टिसे जो जानकारी आवश्यक है उसका संकलन, अध्ययन का कालावधी तथा अध्ययनकर्ता इ. चर्चा होकर यह तय किया गया कि इस अध्ययन के लिये पूर्वछात्रों को उनके घर जाकर मिलना ही उपयुक्त होगा, न कि उन्हें किसी एक जगह पर बुलाकर अध्ययन करें. उनका घर- गांव भले ही दूर हो, हमें वहां जाकर उनसे मिलना चाहिए. प्रत्यक्ष साक्षात्कार से ही उनकी वर्तमान स्थिती (व्यक्तिगत जीवनशैली, अर्थप्राप्ती का माध्यम तथा सांपत्तिक स्थिती, उनका मानस, स्थानीय सामाजिक कार्य में सहभाग इ.) का अध्ययन करके हमारे प्रयासों की उपलब्धियों का अनुमान लगाया जा सकता है.
- इस दृष्टिसे विविध मातृसंस्थाओं द्वारा चलाये जा रहें पूरे देशभर के छात्रावासोंसे पूर्व छात्रों की सूचि संकलित करने का काम पहले किया गया. जो कम से कम 3 वर्ष छात्रावासों में रह चुके है ऐसे 2005 तक के पूर्वछात्रों को इस अध्ययन में संपर्क करना तय हुआ था. इस प्रकारसे सूचि बनायी गयी.
- विश्व हिंदू परिषद , वनवासी कल्याण आश्रम, विद्या भारती, रा. से. समिती जैसे मातृ संघठनोंने अपने अपने छात्रावासों में पढें पूर्व छात्रों की सूचि भेजने में सहयोग दिया.
- साक्षात्कार में चर्चा तथा जानकारी संकलन के लिये उपयुक्त प्रपत्र बनाये गये जो निम्न प्रकार के है.
- पूर्व छात्र, पूर्वछात्र के अभिभावक, पूर्वछात्र का स्थानीय उसके साथ पढाई करनेवला मित्र, स्वधर्मी संघठन के कार्यकर्ता तथा स्थानीय संघ/ मातृसंस्था कार्यकर्ता.
- इस प्रपत्र को लेकर पूर्वाभ्यास प्रवास किया गया, उसी के आधारपर प्रपत्र में सुधार किये गये और अंतिम प्रपत्र अध्ययन के लिए भेजे गये.
- यह निश्चित किया गया की, अध्ययन का काम पूर्वांचल के कार्यकर्ता ही करें. इन कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देना आवश्यक था. बनाये गये प्रपत्र के आधार पर अध्ययन की योजना बनाने हेतु जो बैठकें तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम हुए उसकी जानकारी निम्न है.
    - 1, 2 मई 2013 इंफाल, मणिपूर.
    - 25,26 मई 2013 अगरतला, त्रिपुरा.
    - 1,2 जून 2014 हवाईयंग, मिझोराम.
    - 1,2 जून इटानगर अरुणाचल.
    - 16 जून हाफलांग, दक्षिण असम
- इसी के साथ पूर्वांचल के सभी प्रांतों के विविध संघटनों के कार्यकर्ताओं की बैठकों में इस विषय को रखा गया तथा अध्ययन में सहयोग की चर्चा की गयी. पूर्वांचल में काम कर चुके पूर्व प्रचारक - पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं की सूची बनाकर उन्हें भी इस योजना में सहयोग देने का आवाहन किया गया.
- अध्ययन के संचालन के लिए टोली का गठन करके नियमित बैठकों की रचना बनायी गयी. टोली के सदस्यों ने भी पूर्वांचल में प्रवास कर अध्ययन के अन्य पहलूओं पर विशेष ध्यान दिया.

- राष्ट्रीय सेवा भारती तथा रा. स्व. संघ के मा. अधिकारियों के प्रवास भी इसी विषय को लेकर हुए.
- कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण कार्यक्रम में इस अध्ययन की पृष्ठभूमी तथा संकल्पना, प्रपत्र/ प्रश्नावली का स्वरूप तथा जानकारी संकलन की पध्द्ती, प्रपत्रों में भरने जानकारी के अलावा अपने निरीक्षण तथा सुझाव इ. पर व्यापक चर्चा होकर अध्ययन के लिए प्रवास तथा अन्य योजना बनायी गयी.
- नमुना प्रपत्र/ प्रश्नावली सर्वेक्षण हेतू (Pre Testing) 28 मई से 3 जून 2013 दरम्यान त्रिपुरा और मिझोराम में पूर्वछात्र, उनके अभिभावक, पूर्वछात्र का गाँवमें रहनेवाला मित्र, जनजाति संघठन के (स्वधर्मी) कार्यकर्ता, मातृसंस्था/ संघ कार्यकर्ताओं से साक्षात्कार कर जानकारी प्राप्त की गयी. नमुना सर्वेक्षण मे 40 तक प्रपत्र/ प्रश्नावली भरकर प्राप्त हो गयी. प्राप्त जानकारी नुसार प्रपत्र/प्रश्नावली में सुधार किये गये और अंतिम प्रपत्र/प्रश्नावली पूर्वांचल में आवश्यक सूचनापत्र के साथ भेजी गयी.

अभीतक का काम:

पूर्वछात्रों के गाँव - घर जाकर भरे हुए प्रपत्र का ब्यौरा निम्न है.

अभी तक 193 पूर्वछात्रों के कुल 332 प्रपत्र भरकर प्राप्त हुए है. इन प्रपत्रों से प्राप्त जानकारी का संकलन तथा विश्लेषण (Data entry & Analysis) सेवावर्धिनी कर रही है. अंतिम निवेदन में इस का पूर ब्यौरा उपलब्ध होगा. इस अध्ययन के मुख्य बिंदू निम्न है.

उपलब्धी :

- Entry Point Activity के रूप में इन छात्रावासों का योगदान बहुत बडा है. ईसाई मिशनरियों के सेवाकार्य के बुरखे के पीछे चल रहे मतांतरण के प्रयासों को कुछ हद तक रोकने में इन छात्रावासों के कारण सफलता मिली है.
- हिंदू मिशन के कार्यकर्ताओं को पूर्वांचल के विभिन्न जनजाति समाज से व्यापक संपर्क तथा संवाद का अवसर प्राप्त हुआ है.
- पूर्वांचल के अनेक गरीब परिवारों के बच्चे इन छात्रावासों के कारण अपनी पढाई पूरी कर सके, जो उनके लिए अन्यथा अत्यंत कठिन था. अपनी जनजाति की भाषा के साथ अन्य भारतीय भाषा जैसे हिंदी, बंगाली, मराठी, कन्नड, तेलुगु इ. का भी अध्ययन इन बच्चों ने किया जिससे उनकी ज्ञानकक्षा का विस्तार हुआ.
- पूर्वांचल क्षेत्र में समाज का शैक्षिक स्तर बढाने में इस प्रयास की दखल देनी होगी. पूर्वांचल में शेष भारत से गये व्यक्तियों को *"आप भारत से आये है क्या..?"* इस प्रकारके प्रश्न से स्वागत होना आम बात है. भारत अपना - हम सब का देश है यह भावना बनाने में कहीं कमीं आयी है, जिसके कारण ऐसे प्रश्न पूछे जाते है. छात्रावासों के कारण इन बच्चों को तथा उनके अभिभावकों को भी,पूर्वांचल के साथ उत्तर भारत, दक्षिण भारत का ज्ञान हुआ तथा महाराष्ट्र, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, दिल्ली जैसे राज्य भी हमारे देश के ही अंग है यह भावना विकसित हुई.

- पूर्वांचल में व्यक्तिकेंद्रित जीवन पध्दती का जो प्रभाव इन दिनों में बना हुआ है, उससे चलते कई लडके जैसे ही बडे होते है अपने माँ- पिताजी को छोडकर अलग घर बिठा लेते है. ऐसी परिस्थिती में, इन पूर्व छात्रों के मन में परिवार के सदस्यों के प्रति प्यार- लगाव उत्पन्न होने में इन छात्रावासों का महत्वपूर्ण योगदान है.
- छात्रावासों से मिले संस्कारों के कारण यह लडके जब अपने गाँव वापस जाते है तो गाँव के कई कार्यक्रमों में उन्हें सम्मानपूर्वक बुलाया जाता है, दुर्गापूजा- जन्माष्टमी जैसे त्यौहारों में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी जाती है. कई छात्र अपनी जनजाति (स्वधमी) संघठनों में भी कार्यरत है.
- पूर्वांचलमें विविध जनजातियों में झगडे होते है, सशस्त्र संघर्ष भी होते है यह हम सब जानते है. यह एक राजनीतिक षडयंत्र है, स्थानीय चर्च का ऐसे झगडे खडे करने में बडा योगदान है और उसकी जडे उनकी विदेशी नीति, संसाधन तथा शिक्षा से जुडी है यह भी हम जानते है. इस पृष्टभूमीपर पूर्वांचल के विभिन्न जनजाति के छात्र एक ही छात्रावास में खुशी से रहते है और छात्रावास से वापस आनेपर भी उनका आपसी सौहार्द टिका हुआ है, यह समरसता के हमारे प्रयासों का परिचायक है.

त्रुटि/ मर्यादा :

- इस प्रकल्प में सहभागी छात्रों के प्रभावी संपर्क की यंत्रणा हम खडी नहीं कर पाये है.
- इन पूर्वछात्रों से नित्य संपर्क करके उनमें से कुछ सक्षम लोगों को संघठन के कार्य के लिये प्रवृत्त कराने में कहीं हमारी कमीं रही है. कुछ जगह जरूर यह प्रयास हुआ है, लेकिन इसके लिये एक अलग रचना खडी करने का प्रयास - जैसे प्रवासी कार्यकर्ता, पूर्व छात्रों का संघठन - नहीं हुआ है.
- छात्रावासों के शुरुआत के दिनों में मयादित उद्देश्य से काम करना ठीक था. जैसे जैसे उसे प्रतिसाद बढता गया वैसे वैसे ही उस के संचालन में ज्ञान - कौशल- संघठन वृध्दी की ओर ध्यान देना आवश्यक था.
- छात्रावासों में (Vocational Training) व्यावसायिक प्रशिक्षण की व्यवस्था करना अत्यंत आवश्यक है.
- छात्रावासों के व्यवस्थापक के पद पर कोई जरूरतमंद व्यक्ति को चिपकाने के बजाय उस पद का अलग दृष्टि से विचार होना आवश्यक है. इस पूरे प्रयास की उपलब्धियों में उनका जो स्थान है उसका अहसास उन के मन में उत्पन्न करनेवाला प्रशिक्षण पाठ्यक्रम बनाकर उसीके अनुसार उनके प्रशिक्षण की व्यवस्था, उस पद के लिये आवश्यक उनके भी कौशल का विकास - जैसे संवाद, समुपदेशन (Counseling), जनसंपर्क (Public Relation), अभिलेखन (Documentation) आवश्यक है.

सूचना:

- पूर्वछात्रों का राज्य - जिला - जनजातिनुसार संघठन खडा करना . *" पूर्वछात्र परिषद "* जैसे संघठन के माध्यम से उनके नियमित संपर्क की व्यवस्था खडी करना आवश्यक है .

- इस दृष्टि से अभी के अनुकूल समय/ वातावरण को देखते हुए इन पूर्वछात्रों का एक संमेलन करना उपयुक्त होगा. योजनापूर्वक संपर्क, निमंत्रण, स्थानीय परिस्थिती का निवेदन तथा आवश्यक सेवा प्रकल्पों का विचार उसमें जरूर हो.
- छात्रावास प्रकल्प की विशेषता देखते हुए प्रत्येक राज्य के लिये कम से कम एक प्रवासी कार्यकर्ता की योजना करना आवश्यक है. यह कार्यकर्ता प्रचारक ही हो यह आग्रह न रखते हुए मानधन देकर किसी अच्छे- सक्षम गृहस्थी कार्यकर्ता को भी नियुक्त कर सकते है.
- छात्रावासों की सुविधाओं का भी समय समय पर मूल्यांकन होना आवश्यक है.
- छात्रावासों के दैनंदिन उपक्रमों का नियोजन बदलते हुए समय की माँग को समझ कर करना तथा आवश्यकता नुसार उसमें सुधार लाना .
- Skill Training, Vocational Training की व्यवस्था छात्रावास में खडी करना.
- पूर्वछात्रों की संघठन शक्ति को देखते हुए सरकारी योजनाओं का लाभ उनके लिए उठाने की व्यवस्था खडी करना.

ऋषिपाल डडवाल

महासचिव, राष्ट्रीय सेवा भारती.
दिल्ली प्रशासनिक कार्यालय,
समुदाय भवन, तीसरी मंजिल, टँक रोड, करोल बाग, नयी दिल्ली- 110005.
दूरभाष: 011- 25814928 , 25014693 . ईमेल : rastriyasewa@gmail.com